सूरह — एक कहानी

# सूरह अल-इंशिक़ाक़

फट जाना

पूरा सफ़र — आसमान सुनता है, और इंसान घर की तरफ़ मेहनत करता है — जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 84 • 25 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

इज़स्-समा-उन्-शक़्क़त
1. जब आसमान फट जाए।

व अज़िनत लि-रब्बिहा व हुक़्क़त
2. और वो अपने रब का हुक्म सुने, और उसी का हक़ है।

या अय्युहल्-इंसानु इन्नक कादिहुन इला रब्बिक कद्हन फ़-मुलाक़ीह
6. ऐ इंसान! तू अपने रब की तरफ़ मेहनत कर रहा है, और उससे मिलने वाला है।

फ़-अम्मा मन ऊतिय किताबहू बि-यमीनिह
7. तो जिसे उसका नामा-ए-अमल दाएँ हाथ में दिया गया।

फ़-सौफ़ युहासबु हिसाबंय्-यसीरा
8. उसका हिसाब आसान लिया जाएगा।

ल-तर्कबुन्न तबक़न 'अन तबक़
19. तुम ज़रूर दर्जा-ब-दर्जा चढ़ोगे।

## आसमान बग़ैर बहस के मान लेता है

बेटा, यह सूरह दुनिया के ख़ात्मे को सबसे नरम अल्फ़ाज़ में बयान कर के शुरू होती है — और यही नरमी ख़ुद एक सबक़ है।

'इज़स्-समा-उन्-शक़्क़त — जब आसमान फट जाए — व अज़िनत लि-रब्बिहा व हुक़्क़त — और वो अपने रब का हुक्म सुने — और उसी का हक़ है।'

बेटा, उस दूसरी आयत को देखिए। आसमान को 'अज़िनत' कहा गया — उसने सुना, कान लगाया, तवज्जोह से इताअत की — वही मादा जिससे 'अज़ान' है जो आप दिन में पाँच बार सुनते हैं। और 'हुक़्क़त' — और उसी का हक़ है कि वो ऐसा करे; उसके पास कोई दूसरा ऑप्शन नहीं और वो चाहेगा भी नहीं।

'व इज़ल्-अर्ज़ु मुद्दत — और जब ज़मीन फैला दी जाए — व अल्क़त मा फ़ीहा व तख़ल्लत — और वो अपने अंदर का सब कुछ बाहर डाल दे और ख़ाली हो जाए — व

अज़िनत लि-रब्बिहा व हुक़्क़त — और वो अपने रब का हुक्म सुने, और उसी का हक़ है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: ज़मीन हमवार हो जाएगी — हर पहाड़ और वादी बिछे हुए क़ालीन की तरह बराबर — और वो अपने अंदर निगला हुआ सब कुछ उगल देगी जो उसने पूरी तारीख़ में समेटा था। और वो भी सुनती है, और मानती है।

अब इस तज़ाद को महसूस कीजिए जो सूरह बना रही है। आसमान — अपनी ना-क़ाबिल-ए-तसव्वुर वुसअत के साथ — और ज़मीन, अपने सारे बोझ के साथ, दोनों एक लफ़्ज़ बहस के बग़ैर सुनते और मानते हैं। और फिर अल्लाह एक छोटी सी मख़लूक़ की तरफ़ मुड़ते हैं जो एक बूँद से बनी है, और जो अपने दिन ये बहस करते गुज़ार देता है कि उसे नमाज़ पढ़नी चाहिए या नहीं।

## तू मेहनत कर रहा है — उसी की तरफ़

और फिर ख़िताब आप की तरफ़ मुड़ता है, बेटा, एक ऐसी आयत के साथ जो इंसानी ज़िंदगी का बयान किसी भी सीरत-निगारी से ज़्यादा दुरुस्त कर देती है:

'या अय्युहल्-इंसानु इन्नक कादिहुन इला रब्बिक कद्हन फ़-मुलाक़ीह — ऐ इंसान! बेशक तू अपने रब की तरफ़ सख़्त मेहनत कर रहा है — और तू उससे मिलने वाला है।'

बेटा, 'कद्ह' का मतलब है सख़्त, थका देने वाली मेहनत — वो कोशिश जो हाथों पर निशान और चेहरे पर लकीरें छोड़ जाती है। और अल्लाह फ़रमाते हैं: यही तो तू है। ये नहीं कि तू कभी मेहनत करेगा — तू अभी, इस वक़्त, मेहनत की हालत में है।

और ये हर एक के लिए सच है, बेटा, मोमिन और मुनकिर दोनों के लिए। किसी भी इंसानी ज़िंदगी को देखिए: तालिब-ए-इल्म ज़ोर लगा रहा है, मज़दूर पसीना बहा रहा है, ताजिर फ़िक्र में घुला जा रहा है, माँ रात भर जाग रही है, रिटायर आदमी अपनी बीमारियों से निबट रहा है। 'कद्ह' से कोई नहीं बचता। अमीर आदमी भी मेहनत करता है — इस पर कि क्या बचाए, किस पर भरोसा करे, इसे कैसे थामे रखे।

तो सूरह आपको मेहनत रोकने को नहीं कह रही। वो आपको सिम्त बता रही है: 'इला

रब्बिक' — अपने रब की तरफ़। उस मेहनत का हर क़दम, चाहे आप इरादा करें या न करें, आपको उनसे मिलने के क़रीब ले जा रहा है। सवाल सिर्फ़ ये है कि क्या आपको पता है कि आप सफ़र में हैं — और क्या आपने चुना है कि साथ क्या ले कर चलना है।

बेटा, ये एक आयत एक आम काम-काजी ज़िंदगी को बदल सकती है। वही बारह घंटे की शिफ़्ट, वही थका देने वाला सफ़र, वही खाना पकाना और सफ़ाई — जब ये सोच कर की जाए कि 'मैं अपने रब की तरफ़ मेहनत कर रहा हूँ और मैं उनसे मिलूँगा' — तो एक मंज़िल वाला सफ़र बन जाती है, न कि बस एक ट्रेडमिल।

## आसान हिसाब

फिर सूरह दिखाती है कि वो मुलाक़ात दो तरह हो सकती है: 'फ़-अम्मा मन ऊतिय किताबहू बि-यमीनिह — तो जिसे उसका नामा-ए-अमल दाएँ हाथ में दिया गया — फ़-सौफ़ युहासबु हिसाबंय्-यसीरा — उसका हिसाब आसान लिया जाएगा — व यन्क़लिबु इला अह्लिही मसरूरा — और वो अपने लोगों की तरफ़ ख़ुश-ख़ुश लौटेगा।'

बेटा, हमारी माँ आइशा (रज़ि0) ने नबी ﷺ को इसका ज़िक्र करते सुना और पूछा: या रसूलल्लाह, क्या आसान हिसाब बस यही नहीं कि अल्लाह बंदे के नामे पर नज़र डालें और उससे दर-गुज़र फ़रमा दें? आप ﷺ ने फ़रमाया: वो तो सिर्फ़ पेशी है — 'और जिससे हिसाब में पूछ-ताछ की गई, वो हलाक हो गया।' और आप ﷺ ये दुआ किया करते थे: 'अल्लाहुम्म हासिब्नी हिसाबंय्-यसीरा' — ऐ अल्लाह, मेरा हिसाब आसान फ़रमा।

तो 'आसान हिसाब', बेटा, एक रहमत है: अमल दिखाए जाते हैं, गुनाह मान लिए जाते हैं और फिर ढाँप दिए जाते हैं, और बंदा गुज़र जाता है। हदीस बयान करती है कि अल्लाह अपने मोमिन बंदे को क़रीब कर लेते हैं, अपनी चादर उस पर डाल देते हैं, और पूछते हैं: ये गुनाह याद है? और ये? — यहाँ तक कि बंदे को यक़ीन हो जाता है कि वो हलाक हो गया — और फिर अल्लाह फ़रमाते हैं: मैंने इसे दुनिया में तेरे लिए छुपाया था, और आज तेरे लिए बख़्श देता हूँ।

और वो ख़ूबसूरत तफ़्सील देखिए, बेटा: वो अपने अहल की तरफ़ — अपने लोगों,

अपने ख़ानदान की तरफ़ — 'मसरूरा', ख़ुश हो कर लौटेगा। जन्नत में भी ख़ुशी तन्हा नहीं है।

'व अम्मा मन ऊतिय किताबहू वरा-अ ज़हिह — मगर जिसे उसका नामा-ए-अमल उसकी पीठ के पीछे से दिया गया — फ़-सौफ़ यद्'ऊ सुबूरा — वो हलाकत को पुकारेगा — व यस्ला स'ईरा — और भड़कती आग में जलेगा।'

बेटा, उसकी हालत की जो वजह दी गई वो एक ही लाइन है, और वो आपकी तवज्जोह के लायक़ है: 'इन्नहू कान फ़ी अह्लिही मसरूरा — बेशक वो अपने लोगों में ख़ुश रहा करता था।'

ग़ौर से देखिए। वही लफ़्ज़ — मसरूर, ख़ुश — दोनों आदमियों के लिए इस्तेमाल हुआ। एक हिसाब के बाद ख़ुश है; दूसरा हिसाब से पहले ख़ुश था, एक ऐसी ज़िंदगी में जो खेल-तमाशे में गुज़री, कभी एक बार भी ये न सोचते हुए कि आगे क्या आ रहा है। यही पूरा फ़र्क़ है: उधार पर ख़रीदी हुई ख़ुशी जिसकी क़ीमत बाद में चुकाई जाए, या अभी की मेहनत और वो ख़ुशी जो कभी ख़त्म न हो।

'इन्नहू ज़न्न अल्-लंय्-यहूर — बेशक उसने समझा था कि वो कभी नहीं लौटेगा। बला — क्यों नहीं! इन्न रब्बहू कान बिही बसीरा — उसका रब उसे ख़ूब देख रहा था।'

## दर्जा-ब-दर्जा

फिर अल्लाह क़समों का एक सिलसिला खाते हैं: 'फ़-ला उक़्सिमु बिश्-शफ़क़ — तो मैं क़सम खाता हूँ शाम की सुर्ख़ी की — वल्-लैलि व मा वसक़ — और रात की और जो कुछ वो समेट लेती है — वल्-क़मरि इज़त्-तसक़ — और चाँद की जब वो पूरा हो जाए।'

बेटा, इन तीन क़समों में तरतीब देखिए: सूरज डूबने के ठीक बाद की सुर्ख़ी, फिर गहरी होती रात जो हर चीज़ को अपने अंदर समेट लेती है, फिर चाँद अपनी मुकम्मल पूराई को पहुँचता हुआ। मरहले। दर्जे। कुछ भी एक साथ नहीं आता।

और फिर क़सम का जवाब: 'ल-तर्कबुन्न तबक़न 'अन तबक़ — तुम ज़रूर दर्जा-ब-

दर्जा, एक हालत से दूसरी हालत चढ़ोगे।'

बेटा, ये आपकी पूरी ज़िंदगी की आयत है। जिस तरह आसमान सुर्ख़ी से रात और फिर पूरे चाँद तक चलता है, इंसान को भी दर्जा दर दर्जा ले जाया जाता है: एक बूँद, फिर जमा हुआ ख़ून, फिर नौमौलूद, फिर बच्चा, फिर जवान, फिर बालिग़, फिर बाल सफ़ेद होते हुए, फिर कमज़ोर होते हुए, मौत, क़ब्र, दोबारा ज़िंदा होना, खड़ा होना, हिसाब, मंज़िल। तह दर तह, और कोई किसी एक में ठहरता नहीं।

और इसमें रहमत यही है, बेटा: आप किसी एक मरहले से चिपके नहीं रह सकते। वो सख़्त मरहला जिसमें आप अभी हैं — वो बीमारी, वो क़र्ज़, वो ग़म, वो इम्तिहान का मौसम — एक 'तबक़' है, और ये गुज़र जाएगा, क्योंकि गुज़रना ही मराहिल का क़ानून है। और आराम वाला मरहला भी एक तबक़ है, इसलिए उसमें पक्का घर मत बनाइए।

'फ़-मा लहुम ला यु'मिनून — तो उन्हें क्या हो गया कि ईमान नहीं लाते? व इज़ा क़ुरि-अ 'अलैहिमुल्-क़ुरआनु ला यस्जुदून — और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाए तो सजदा नहीं करते?' बेटा, ये सजदे की आयतों में से है — और नबी ﷺ ने इसे पढ़ने पर सजदा किया। बनावट देखिए: जिन्होंने सजदा करने से इनकार किया उनका ज़िक्र है, और मोमिन का रद्द-ए-अमल ये है कि फ़ौरन सजदे में चला जाए, गोया कह रहा हो: मैं नहीं, या रब्ब।

## जो वो अपने अंदर रखते हैं

'बलिल्-लज़ीन कफ़रू युकज़्ज़िबून — बल्कि जो मुनकिर हैं वो झुठलाते हैं — वल्लाहु अ'लमु बिमा यू'ऊन — और अल्लाह उसको ख़ूब जानते हैं जो वो अपने अंदर समेटे हुए हैं।'

बेटा, 'यू'ऊन' उस बर्तन से है जो चीज़ को थामे और जमा कर के रखे। हर इंसान अपने अंदर एक गुदाम लिए फिरता है: असल महरिकात, कीने, पोशीदा उम्मीदें, वो बातें जो हमने कभी ज़ुबान पर नहीं लाईं और कभी लाएँगे नहीं। और अल्लाह फ़रमाते हैं: मैं ठीक ठीक जानता हूँ कि उस कमरे में क्या है।

ये मुनकिरों के लिए तंबीह है, बेटा — मगर मोमिन के लिए ये एक अजीब तसल्ली भी है। क्योंकि इसका मतलब ये है कि वो नेकी जो आप छुपा कर रखते हैं वो भी बराबर मालूम है: वो सदक़ा जो किसी ने नहीं देखा, रात के आख़िरी पहर के आँसू, वो माफ़ी जो आपने ख़ामोशी से दी, वो गुनाह जिसे आपने अकेले में छोड़ दिया जब कोई देखने वाला नहीं था।

'फ़-बश्शिर्हुम बि-'अज़ाबिन अलीम — तो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए।' बेटा, लफ़्ज़ 'बश्शिर्हुम' में तल्ख़ तंज़ देखिए — उन्हें ख़ुशख़बरी दीजिए — दर्दनाक अज़ाब की।

'इल्लल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति लहुम अज्रुन ग़ैरू मम्नून — सिवाए उन के जो ईमान लाए और नेक अमल किए — उनके लिए वो अज्र है जो कभी नहीं टूटेगा, ख़त्म नहीं होगा, और जिस पर कोई एहसान नहीं जताया जाएगा।'

बेटा, देखिए सूरह कैसे ख़त्म होती है — 'ग़ैरू मम्नून' पर: ऐसा अज्र जो कभी ख़त्म नहीं होता, कभी काटा नहीं जाता, और जिसके बाद कभी एहसान नहीं जताया जाता। इस दुनिया में, सबसे मेहरबान मदद के साथ भी कभी एक पोशीदा बिल जुड़ा होता है: एक एहसान-मंदी, एक ज़िक्र, एक नज़र। अल्लाह का अज्र साफ़-सुथरा है। दिया गया, और कभी सर पर नहीं रखा गया।

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** आसमान और ज़मीन बग़ैर बहस के मानते हैं — अपनी इताअत को भी यही रंग दीजिए: सुन कर कर देना, बिना भाव-ताव के।

**2.** आप पहले से मेहनत कर रहे हैं; सवाल सिर्फ़ सिम्त का है — 'मैं अपने रब की तरफ़ सफ़र में हूँ' कहिए और आम काम एक सफ़र बन जाएगा।

**3.** रोज़ाना आसान हिसाब माँगिए — 'अल्लाहुम्म हासिब्नी हिसाबंय्-यसीरा' — क्योंकि उस दिन पूछ-ताछ हलाकत है।

**4.** दो आदमी, एक लफ़्ज़: एक हिसाब से पहले ख़ुश था, दूसरा बाद में — देखिए आप

कौन सी ख़ुशी ख़रीद रहे हैं।

**5.** ज़िंदगी 'तबक़न 'अन तबक़' है — कोई मरहला मुस्तक़िल नहीं: आपकी मुश्किल गुज़रेगी, और आपका आराम भी।

**6.** जब दूसरे सजदा करने से इनकार करें, आप वो बनिए जो सजदे में चला जाए।

**7.** अल्लाह आपके अंदर के गुदाम को जानते हैं — तो अपनी नेकियाँ इसी में ए'तिमाद के साथ छुपाइए, और जो नहीं रखना चाहिए उसे निकाल फेंकिए।

या अल्लाह, हमारे दिलों को ऐसे सुनने वाला बना दीजिए जैसे आसमान सुनता है, हमारी मेहनत को अपनी तरफ़ का सफ़र बना दीजिए, और हमें आसान हिसाब अता फ़रमाइए। आमीन।